Baat Ka Batangar

(An Anthology of Humorous Articles)
by R.S.Yadav

बात का बतंगड़

(व्यंग्यात्मक निबंध संग्रह)

मूल्य रू 150-00

लेखक ''राम सरन यादव''

कापी राइट लेखक के पास
सर्वाधिकार सुरक्षित

पता –
मकान न० बी–160, एन एफ एल कालोनी,
बठिण्डा –151003 (पंजाब)
फोन 9417235525

House No. A-8, Dayanad Rishi Vihar, Opp. Bhrahm Mahavidyalaya, Hisar (Haryana)
Email: yadav_sumitra@yahoo.com
yadavsumitra@gmail.com

आभार

''बात का बतंगड'' व्यंग्यात्मक निबंध संग्रह को प्रकाशित कराने में जिन दोस्तों ने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहायता की है उनकें प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मुख्य रूप से स. राजिन्द्र सिंह मान ,प्रो० गुरूबचन सिंह, मिस कीर्ति तिवारी, मिसेज सुनीता रानी, श्री दिलीप कुमार, श्री बी. डी. शर्मा, बंटी, एवं 'संस्कृति' कार्यकारिणी, का आभारी हूँ जिनके प्रयत्नों से इस पुस्तक को प्रकाशित किया जा सका है एवं जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग एवं उपयोगी सुझाव दे कर इस पुस्तक को और अधिक प्रभावशाली बनाने में मद्द की है।

समर्पण

सादर समर्पित है माननीय डा० वीरेन्द्र प्रताप सिंह, प्राध्यापक, बी.एस. इन्टर कालेज भरखरे, सुलतानपुर को जिनकी चेतना की एक चिन्गारी ना जाने कब मुझे स्पर्श कर गई और मेरे हृदय में हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम का दीप प्रज्वलित कर गई ।

प्रकाशकीय

"संस्कृति" (कला एवं सांस्कृतिक विरासत के विकाश हेतु संस्था) का गठन बठिण्डा के कुछ नवयुवकों द्वारा ०६.०६.१९९१ को किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न कलाओं एवं सांस्कृतिक धरोहरों जैसे शास्त्रीय संगीत (नृत्य,गायन एवं वादन) रचनात्मक लेखन, साहित्य, ड्रामा, मूर्तिकला, छायांकन, पेन्टिंग, ध्यान, योग आदि द्वारा मानव जीवन एवं मानवीय चेतना के विकास हेतु इन क्षेत्रों में अध्ययन एवं अनुसंधान के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिये प्रयत्न करना है। संस्कृति अपने आठ नौ वर्षो के कार्यकाल के दौरान संगीत, योग, पेंटिंग आदि क्षेत्रों में अनेकों कार्यक्रम आयोजित करके कलाकारों एवं नई प्रतिभाओं को रचनात्मक कार्य की तरफ प्रेरित कर रही है और इन सभी क्षेत्रें के कलाकारों को एक मंच पर लाने का प्रयास कर रही है। अच्छे साहित्य को समाज में लाने के लिए संस्कृति ने नये लेखकों की अच्छी साहित्यिक कृतियों को प्रकाशित करने का संकल्प किया है। इस दिशा में श्री राम सरन यादव द्वारा लिखी "बात का बतंगड़" निबंध संग्रह को प्रकाशित करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

"बात का बतंगड़" हास्य व्यंग प्रधान निबन्धो का संग्रह है। इस पुस्तक में हास्य व्यंग के माध्यम से समाज एवं देश में व्याप्त अनेकों बुराईयों – जो हमारे मानवोचित श्रेष्ठ जीवन के विकास में बाधक हैं –की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया गया है । प्रोफेसर गुरबचन सिंह ने आमुख में इस पुस्तक के

सभी निबंधो के बारे में जो संक्षिप्त जानकारी दी है उस से इस पुस्तक की सार्थकता का बोध होता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है जिसमें समाज की आत्मा एवं रूप प्रतिबिम्बित होता है। इस पुस्तक में संग्रहीत एक एक निबंध में समाज का प्रतिबिम्ब स्पष्ट झलकता है। पाठक इन निबन्धों को पढ़ते समय मनोरंजन के साथ साथ अपने अन्तर्मन में झांकने को मजबूर हो जाता है जिससे उसे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

शिव पद बिश्वास
प्रधान "संस्कृति"

लेखकीय

''बात का बतंगड़'' में प्रकाशित सभी कहानियां/लेख काल्पनिक हैं। इन लेखों में यदि कोई पात्र या घटना किसी के जीवन से मिलती जुलती है तो वह मात्र संयोग ही है। इस पुस्तक में संकलित सभी लेख हास्य–व्यंग प्रधान हैं एवं लोगों के मनोरंजन के लिए लिखे गए हैं। यदि इन लेखों में वर्णित किसी घटना या बात से किसी पाठक के दिल को चोट पहुँचती है तो उसके लिए मैं पहले ही क्षमा चाहता हूँ। कहते हैं कि दुखता हुआ हृदय दुखती आँख की तरह होता है जिस में हवा लगने से भी पीड़ा होती है। यदि ऐसे किसी दुखी व्यक्ति का हृदय दुखता है तो उसके लिए मैं विशेष रूप से क्षमा प्रार्थी हूँ।

इन निबन्धों को लिखकर मैं कोई विद्वान या लेखक होने का दावा नहीं कर रहा हूँ । इन निबन्धों में साहित्यिक दृष्टि से बहुत सारे दोष भी हो सकते हैं या अन्य बहुत सी गल्तियाँ भी हो सकती हैं जिसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। पुस्तक के संबंध में दोस्तों के विचारों एवं सुझावों का स्वागत है ।

(राम सरन यादव)
बी–280,एन एफ एल टाउनशिप
बठिंडा –151003 (पंजाब)
फोन : 0164-272485

लेखक्रम

क्रं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	चुनाव	1 - 7
2.	पैसेंजर गाड़ी	8 - 12
3.	चोरी और झूठ	13 – 21
4.	स्कूटर	22 – 31
5.	मूत्रालय से मंत्रालय तक	32 - 39
6.	खम्भा जी	40 - 44
7.	स्वास्थ्य मंत्री स्व.रोगधाम का संसद में भाषण	45 - 50
8.	मोहल्ले में हल्ला	51 - 57
9.	दफतरी लाल	58 - 62
10.	रोड़ा	63 - 66
11.	सुई	67 - 68
12.	कालेज प्रेजीडेन्ट	69 - 75
13.	धोबी बाजार	76 - 78
14.	नशा	79 - 93
15.	वद्यार्थीनामा	94 -105
16.	'ख' जी	106 - 116

आमुख

मानव–जीवन की विकट परिस्थितियों से दीन–हीन होकर कौन है जो धैर्य का दामन पकड़े रह सकता है? अतः हमारे आस–पास का रुदन–क्रन्दन और आर्तनाद हमें झकझोर कर शोक समुद्र में विलीन किये जा रहा है। ऐसी स्थिति में तो ज्ञान की पराकाष्ठा–कबीर दास भी रोते देखे गये हैं, भले ही निज दुःख से नहीं, अपितु पर दुःख कारणः

रंगवाली को नारंगी कहें,
कहें दूध को खोया।
चलती को गाड़ी कहें,
देख कबीरा रोया।

इस करुणा में उनका व्यंग भी निहित है। इसलिए शोक सागर निमग्न जगत की सांत्वना के लिए, जो विनोद, हास्य तथा व्यंग से परिपूर्ण मधुर वाणी प्रस्तुत कर सकता है, उस व्यक्ति, कलाकार, कवि, साहित्यकार आदि के उपकार का आभार तो हम लोग व्यक्त भी नहीं कर सकते। परन्तु ऐसा हास्य–व्यंग किसी भी साहित्य विधा में भर सकना सहज नहीं। कहना न होगा कि गद्य , उसपर भी निबन्ध में हास्य व्यंग का सफल प्रयोग दुर्लभ है। हिंदी भाषा में बेढब बनारसी काव्य में, काका हाथरसी पद्य में, पद्य और गद्य दोनों में डा० इन्द्रनाथ मदान एवं हरिशंकर परसाई आदि निबंध विधा में हास्य–व्यंग की शैली को समूर्त करने में सिद्व–हस्त, इनेगिने साहित्यकार ही हैं।

ऐसे में, श्री रामसरन यादव की पुस्तक 'बात का बतंगड़' हास्य–व्यंग की छटा लिये हुए निबन्ध संग्रह का हम सहर्ष स्वागत करते हैं।

इन निबन्धों का सरसरी अध्ययन करने पर भी हमें यह विदित होता है कि लेखक बड़े सरल भाव से ही, जीवन के विविध आयामों से जुड़े हुए अनेकों विषय, मानों अनायास ही हवा में से पकड़ लेता है और बात आगे बढ़ती है। जीवन के परिपक्व और गम्भीर अनुभवों का आमोद–प्रमोद–मयी शैली में गुंथन इस विलक्षणता से किया होता है कि हम चुटकी लिये बगैर रह नहीं पाते।

पुस्तक के नाम से ऐसा आभास होता है, कदाचित बात का बतंगड़ हुआ होगा, परन्तु जब गहरे में पैठ कर, निबन्धों में निमग्न हो जाते हैं तो हमारे आस–पास में ही चल रही विचित्र लीला का इन में ऐसा संतुलित वर्णन मिलता है जिस में अतिश्योक्ति का लेश मात्र भी नहीं है। इन में प्रस्तुत की गयी समस्याएं, सर्वसाधारण के जीवन का विरोधाभास, सदाचार और जीवन मूल्यों की अवहेलना आदि ऐसे अनेक प्रकरण हैं जो हमारे सामने ही घटित हो रहे हैं, परन्तु क्या हम उनका ऐसा प्रकटीकरण तथा विश्लेषण करने की क्षमता रखते हैं, जिस पैनी दृष्टि से लेखक ने इनका अवलोकन–निरीक्षण किया और फिर रुचिकर निबन्धों में रुपांतरण कर दिया, ऐसी अभिव्यंजना के लिए हम लेखक को बधाई देते हैं। सुधी अध्येताओं से हमारा अनुरोध है कि इनका उचित रसास्वादन कर लाभान्वित हों।

जैसे चन्द्रमा की सोलह कलाएं हैं, ऐसे ही इस पुस्तक के निबन्धों में एक से बढ़कर एक, मानों सोलह कलाएं अपने

पूर्ण उत्कर्ष को प्राप्त होती है, भले ही इन्हें सोलह कला सम्पूर्ण न भी कहा जाये।

पहले निबन्ध में भारतीय गणराज्य के मूल आधार चुनाव की वस्तुस्थिति से हमें अवगत कराया गया है। जिस तरह हमारी राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है और हमारे देश के कर्णधार आचार–विचार तथा उच्च आदर्शों से च्युत हो गये हैं, और वे निर्वाचन पद्धति का जिस निर्लज्जता से दुरुपयोग कर रहे हैं, इस से हमारी गणराज्यी प्रणाली का भविष्य अन्धकारमय होने से दशा दयनीय और शोचनीय बनी हुई है। जनता जनार्दन भी तो प्रायः तन्द्रवस्था में ही अज्ञान सागर में समाधिस्थ है। लेखक ने इस निबन्ध द्वारा इसे जाग्रत करने का भरसक प्रयत्न किया है।

'पैसेंजर गाड़ी' में यहां हमारे देश के रेलवे प्रशासन की कर्तव्य विमुखता पर व्यंग बाणों की वर्षा की है, वहां हमारे नागरिकों की भी अच्छी खबर ली है, जिन्हें अभी तक मानवीय शिष्टाचार तथा जन सुविधाओं के उपयोग का तनिक भी व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो सका।

'चोरी और झूठ' में हमारी इस स्थिति पर उपहास किया है कि 'हम सब चोर हैं चाहे यह चोर वृत्ति, असत्य, भ्रष्टाचार आदि हमारे व्यवहार में अन्तर्निहित हों अथवा कार्यरुपेण प्रकट हों।

'स्कूटर' केवल मनोरंजन की दृष्टि से लिखा गया निबन्ध है, फिर भी हमें यह बोध कराया है कि दूसरों के अनुकरण से बेहतर है कि हम अपनी सरलता'मूत्रालय से मंत्रालय तक' निबन्ध में हमारी राजकीय कार्यविधि और परियोजना की हास्यास्पद स्थिति का विशद उल्लेख किया है

किन्तु इस में समीक्षा के अति उत्साह में बह कर कुछ अनावश्यक विस्तार भी हो गया है।

'खम्भा जी' एक और आमोद प्रमोद हेतु लिखा गया निबन्ध है ऐसा होने पर भी इसमें लोंगों के बनावटी व्यवहार, बिजली और पुलिस विभाग में घूस लेने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

गणराज्य व्यवस्था के उत्तरदायित्व वाले पदों पर आसीन राजनीतिज्ञ भी कितने पतनोन्मुख हो गए है, जो अपने ही सहकर्मी मंत्रियों पर दोषारोपण द्वारा जनहित के कार्यों में रह गई कमियों से स्वयं को दोष मुक्त घोषित करते हैं एक और जनसंख्या की बाढ है दूसरी और अति वृष्टि से प्रकृति के प्रकोप द्वारा बाढ हैं दोनो ही समस्याओं का समाधान ढूंढने में देश के प्रभु विफल रहें हैं, तो भी अपने भाषण में जनहितकर होने का श्रेय पाना चाहते हैं। इस का सजीव चित्रण किया है, 'स्वास्थय मंत्री .... भाषण' में।

'मोहल्ले में हल्ला' कोई गुन्डों का दंगा–फसाद नहीं, अपितु स्वयंभू अध्यक्ष, मंच संचालक, तथा कवियों के तथा कथित कवि सम्मेलन की उपहास पूर्ण गतिविधियों का वृतांत है ।

'दफतरी लाल' एक ऐसे उच्चाधिकारी का रेखाचित्र है जो बहुत से अन्य अधिकारियों की तरह अपनी योग्यता से नहीं, अपितु राजनैतिक पृष्ठभूमि के कारण दफतरों में उच्च पद पर आसीन होते हैं। ऐसे में भला वह रचनात्मक कार्य क्यों करेंगे। राजकीय कार्यालय तो उनके लिए विश्राम गृह अथवा मनोंरंजन स्थान ही होते हैं। जब मन में आया चले आए और दिल भर गया तो वापस चले गए। ऐसे मे पेपरवेट से खेलना उनकी

दिल्लगी बन जाती है, और मेज़ मजा लेने वाली वस्तु से अधिक कुछ नहीं रह जाता ।

'रोड़ा' और 'सुई' दो ऐसे निबन्ध हैं, जिनमें जीवन के दार्शनिक सत्य और सूक्ष्म तत्व विनोदमयी शैली में दर्शाये हैं। वैज्ञानिक और आध्यात्मिक, दोनों दृष्टिकोण से ही हमें यह समझाया गया है कि जड़ और चेतन दोनों का अस्तित्व ग्रहों की तोड़फोड़ से उत्पन्न 'रोड़ों' से ही हुआ है।

सुई हो अथवा तलवार या अन्य कोई वस्तु सब का अपना अपना महत्व और योगदान होता है। फिर भी प्रत्येक प्राणी अपनी वर्तमान स्थिति में रहकर प्रसन्न नहीं, वह और बड़ी ऊंची पदवी का स्वामी बनने की आकांक्षा और तृष्णा से संतप्त रहता है।

'कालेज प्रेजीडेण्ट' और 'विद्यार्थीनामा' में, विद्यार्थी जीवन का व्यंग्यचित्र अंकित किया है। एक कालेज के विद्यार्थी प्रधान से साक्षात्कार की विधि से बातचीत द्वारा यह दर्शाया है कि जो परीक्षा में नकल की सुविधा तथा अन्य अवांछनीय कार्यों से विद्यार्थियों को प्रसन्न कर सकता हो, वहीं प्रधान बनने का सुपात्र है। लेखक अनुसार आजकल के विद्यार्थी वास्तव में विद्या की अर्थी (जनाज़ा) निकालने वाले हैं, इस टिप्पणी से ही हमारी वर्तमान शिक्षा की अधोगति का अनुमान किया जा सकता है। 'विद्यार्थीनामा' में भी प्रायः इसी का उल्लेख किया है। परन्तु इस में विद्यार्थियों की शाखायों का बड़ा रोचक विश्लेषण किया है, जैसे १ प्रेममार्गी शाखा २ ज्ञानमार्गी शाखा (इन दोनों से ऐसा आभास होता है, जैसे वेदान्त या किसी अन्य आध्यात्मिक

परम्पराओं की व्याख्या की जा रही है।) ३ नकलमार्गी शाखा ४ चक्कूमार्गी शाखा ५ रट्टामार्गी शाखा इत्यादि।

ऐसे ही 'नशा' नाम के निबंध में विभिन्न नशों के व्यसन में फंसे लोगों तथा नशा देने वाली वस्तुओं का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है नशा करने वाले लोगों की उस मनोवृति पर भी इस में उपहास किया है कि उनमें आत्म संयम का तो नितान्त अभाव होता है, परन्तु वे घोषित करते हैं कि मादक पदार्थ तो शिव शंकर को अर्पण किये जाते हैं, हम तो केवल उनका प्रसाद समझ कर ही उपभोग करते हैं, मानो यह कोई उनका धार्मिक कृत्य है।

'धोबी बाजार' बठिण्डा के एक प्रसिद्व बाजार का दृष्य चित्रण है। इसमें बड़े बड़े व्यापारियों की बनिया–वृति पर व्यंग किया गया है। बठिण्डा नगर के बाशिंदों के लिए इस निबंध में विशेष आकर्षण रहेगा।

अन्तिम निबंध 'ख' जी हमारे ग्रामीण क्षेत्र में नियुक्त प्राइमरी स्कूल के एक प्रतिनिधि अध्यापक का रेखाचित्र है, जिसकी आकृति, मनोदशा, क्रियाकलाप आदि सभी हास्यास्पद हैं। वह एक दफा उस गांव के स्कूल में ही दिन रात्रि, विद्यार्थियों सहित, रहने लग जाता है, जिस से ग्रामीण अनपढ़ लोगों को यह भ्रम होता है जैसे वह रात–दिन उनके बच्चों के अध्यापन कार्य में ही लगा रहता है। वास्तव में बात यह थी कि उसने नसबन्दी का आप्रेशन कराया था, जिस कारण पहले की तरह वह साईकिल पर प्रतिदिन दूर से आने जाने का कष्ट झेल नहीं सकता था।

इस निबन्ध में लेखक के आत्मकथात्मिक संस्मरण भी है। ग्रामीण जीवन की असुविधाओं के रहते भी , उन्हें सरस्वती का वरदान मिलना बड़ाही प्रेरणाप्रद है।

इन निबन्धों से लेखक की भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, इस में उनका प्रचुर ज्ञान और जगह जगह पर प्रत्येक रचना में इसका समुचित प्रयोग प्रशंसनीय है।

भाषा शैली में एक विशेष निजी पहचान बनाने का प्रयास देखा जा सकता है, जैसे उर्दू–फारसी की शब्दावली प्रति उनका मोह, इस का एक पक्ष है जो बहरहाल, फिलहाल, रु–ब–रु, इनायत, खुरफाती इत्यादि शब्द प्रयोगों से सिद्ध है। तालब्य 'श' की बजाय दंत्य 'स' की और अधिक झुकाव है, जैसे:

तालव्य	दन्त्य
खुशी	खुसी
शाबाशी	शाबासी
कोशिश	कोशिस
विश्वास	विस्वास
बताशा	बतासा
एम्बीशियस	एमबीसियस
कंडीशन्ड	कंडीसन्ड
इलैक्शन	इलैक्सन

इत्यादि

आधुनिक युग में चाहे तत्सम शब्दावली का प्रयोग प्रबल हो रहा है, परन्तु हमारी परम्परा की सम्पदा पर यदि दृष्टिपात की जाये तो हमें तद्‌भव शब्दावली ही उस में प्रायः मिलेगी। देखो कबीर

दास, सूरदास, तुलसीदास, केसवादास आदि की काव्य रचना, जैसे:–

१ कियो सींगार मिलन के ताईं (कबीर दास)

२ जिह उपदेस मिले हरि हमको, सो ब्रत नेम (सूरदास)

३ कै जाचै घनश्याम सों, कै दुख सहहि नीर
(तुलसी दास)

४ केसव केसन अस करी, जस अरि हूं न कराहिं
(केसव दास)

इस उपरान्त लेखक को कुछ सुझाव देने की इच्छा से सविनय अनुरोध है कि शब्द चयन, वाक्य, विन्यास तथा विषय वर्णन में जहां तक हो पाये शुद्धता, संयम और सौन्दर्य का दामन न, छोड़ा जाये।

'विद्यार्थीनामा' निबन्ध में जो अन्त में एक पुष्पिका दी गई है:
'अथ श्री विद्यार्थीनामा नामः प्रथमोन्तिमों अध्यायः'
इसमें थोड़ा संशोधन किया जाये:
'इति श्री ....
क्योंकि परम्परा से 'अथ' रचना के आदि में तथा 'इति' रचना के अन्त में रखना शुभ होता है।

अन्तिम निबन्ध 'ख' जी के अन्त में जो दोहा उद्धृत किया है , वैसे तो इस दृष्टिकोण से न्यायसंगत कहा जा सकता है कि:
एकाक्षर दातारं यो गुरुं नाभिवन्दते।
श्वान योनी शंत भुक्तवा चाण्डालेष्वभिजायतें।।

फिर भी कबीर जी का अभिप्राय इस उद्धृत दोहा में स्पष्ट है कि यह विद्यागुरु की महिमा में नहीं, अपितु यह अध्यात्मिक गुरु का अभिनन्दन हैं। हां 'ख' जी जैसे व्यक्ति की

और इंगित करने से, इस दोहा से भी व्यंग्यात्मक ध्वनि मुखरित अवश्य हो रही हैं।

आप ने मुझे इस निबन्ध संग्रह का अध्ययन– अनुशीलन करने तथा इस का आमुख लिखने का अवसर प्रदान किया है, इस सम्मान के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं।

यह निबन्ध संग्रह हिन्दी गद्य साहित्य में अपना एक विशेष स्थान तो बनायेगा ही, साथ ही यह लेखक को सतत दृढसंकल्प और साधना–रत रहने का उत्साह भी प्रदान करेगा जिसके फल स्वरूप भविष्य में इस से भी बढकर हमें और रचनाएं मिलेंगी , ऐसा मेरा विश्वास है।

तिथि
22-8-1998

गुरबचन सिंह (प्रो०)
अवकाश प्राप्त अध्यक्ष
पंजाबी विभाग,
गुरूनानक कालेज,
बुढलाडा (मानसा)
वर्तमान :
गांव व डाकघर. नरुआना
जिला बठिण्डा ।

चुनाव

चुनाव से तो आप सभी का ताल्लुक तो होगा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा ही। स्वतंत्रता के बाद जो हम सभी को सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण चीज विरासत में मिली है वह है चुनाव । पहले तो किसी को पता भी नहीं होता था कि चुनाव किस चिड़िया का नाम है ? लेकिन अब गाँव–गाँव में, गली–गली में चुनाव ही चुनाव हैं, चुनाव कार्यालय हैं । पहले होता था कि चुनाव पांच साल में एक बार होता था किन्तु आजकल इसका कोई भरोसा नहीं है । इसका भी भारतीय मौसम की तरह चाल ढाल बदलता ही रहता है एवं भारतीय समाज की तरह अनेकों रूप रंग लेकर आता है । कभी तो पूरे पांच साल गुजर जायेंगे तो आयेगा और कभी तो बिन मौसम की बरसात की तरह गरजता बरसता आ धमकेगा और इसकी झड़ी लग जाती है । सब मिला कर इसका कोई नियत वक्त नहीं है । नेताओं की मेहरबानी पर है कि यह कब जनता के सामने आ फटके । चुनाव आते हैं , जाते हैं, गरीबों की बस्ती पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । हाँ , कभी कभी इतना अवश्य होता है कि इलेक्शन होने के हफ्ते पहले गरीबों की बस्ती में एक दो नल गड़ जायेंगे और इलेक्शन होने के दो चार दिन बाद ही उखाड़ लिए जायेंगें कि गलती से गलत बस्ती में गड़ गया था । भारत का जन्मजात नागरिक होने के कारण मुझे भी इस चुनाव की लड़ाई में कई बार शामिल होने

का मौका मिला । कुछ अनुभव किया, कुछ आंखों देखा, कानों सुना , नाकों सूँघा हाल यहाँ प्रस्तुत है ।

लोक सभा के चुनाव को चुनाव आयोग ने जून में कराने की घोषणा कर दी। दंगा फसाद कराने के लिए इससेबेहतर और कोई समय हो भी नहीं सकता है। गर्मी का महीना होता है, सभी बच्चों के स्कूल बन्द होते हैं ताकि सभी विद्यार्थी एवं अध्यापक इस प्रजातंत्रीय संघर्ष में स्वच्छंद रूप से भाग ले सकें , अपने जातीय झगड़े, वर्गीय भेदभाव आदि से पैदा दुशमनी को निकाल सकें और चुनाव की ओट में अपना उल्लू सीधा कर सकें । कुछ स्कूल कालेजों में तो हाकी आदि वितरित की गई । गाँवों में भी किसान वर्ग अपनी फसल काट चुका होता है, लड़ाई झगड़ा का यदि मूड बने तो पूरी फुरसत होती है । गाँव के लुहारों एवं दूसरे मिस्त्रियों आदि के पास अस्त्र शस्त्र आदि के निर्माण के लिए काफी वक्त होता है । अतः इस मौसम में चुनाव कराने का निर्णय बिल्कुल सोलहों आने जस्टीफाइड है ।

चुनाव आये और लोगों में खुशी की लहर न दौड़े , ऐसा हो ही नहीं सकता। चुनाव का शुभ समाचार पाकर गाँव तथा शहर में हो हल्ला मचना शुरू हो गया। सारी गतिविधियाँ तेज हो गई। गाँवों तथा शहरों में चक्कू,देसी पिस्तौल आदि का निर्माण एवं वितरण शुरू हो गया। कहीं–कहीं नल तो कहीं–कहीं बिजली के खम्भे आदि ला–लाकर रखे जाने लगे । जगह–जगह पर मोटर कारें चक्कर काटने लगीं । हथगोले, कट्टे ,पिस्तौल ,चाकू एवं दूसरे अस्त्रों–शस्त्रों के खरीद फरोख्त के लिए दलाल गाँव–गाँव में

टहलने लगे और इनका वितरण किया जाने लगा । एक तरफ औरतों एवं बच्चों को कम्बल और दवाइयाँ आदि दी जातीं तो उनके बड़े जवान बच्चों एवं आदमियों के हाथों में देसी पिस्तौल और लाठियाँ, बल्लम आदि थमाये जाते हैं ताकि लोग एक दूसरे के ऊपर खूब वोट डाल सकें । प्रजातंत्र का सही माने भी यही है। आखिर प्रजातंत्र जनता का, जनता के द्वारा, जनता पर शासन है, और शासन बिना अनुशासन के हो नहीं सकता ,और भारत में अनुशासन बिना लाठी मारपीट के नहीं आता। अतः चुनावी संघर्ष में यही सब होता है। बहरहाल आगे चलने में ही भलाई है।च

अभी असली चुनाव संघर्ष होने में कई दिन बाकी हैं किन्तु अभी से ही विभिन्न पार्टियों के समर्थकों के बीच मल्लयुद्ध शुरू हो गया है । 'क' पार्टी के उम्मीदवार अड़बंगी लाल ने मैदान में आकर मल्लयुद्ध में लगे अपने अन्धे चमचों एवं पहलवानों को शाबाशी दी और पीठ थपथपाई । सभी चमचे फूल कर रुई के नये गद्दे हो गये और उनके सामने दोनों टांगे ऊपर करके लेट गये , कुत्तों की तरह कूँ–कूँ करने लगे। अड़बंगी लाल उनकी इस स्वामिभक्ति पर प्रसन्न हो, जीतने के बाद उन्हें उचित पुरस्कार से सम्मानित करने का वचन दिया।

'ख' पार्टी के उम्मीदवार मिस्टर अजनबी लाल को कभी किसी ने रू–ब–रू नहीं देखा है । वे शायद हमारे गाँव से दो हजार किलोमीटर दूर के किसी दूसरे राज्य में रहते हैं किन्तु उनके लिए सभी स्थानीय कार्यकर्ता अपना पूरा रणकौशल दिखा रहें हैं । यहाँ तक कि अपने पड़ोसी भाइयों एवं बहनों को, जो दूसरी पार्टी की तरफ से समर्थन कर रहें हैं, उन्हें अपना दुश्मन

समझने लगे हैं और उनसे बातचीत तक करना बन्द कर दिया है ।

संसद भवन की सीटें मानों भारत की कुंवारी सुन्दरियाँ हैं जिनका स्वयंवर हो रहा है । चुनाव में जीतने के बाद एक एक सीट सुन्दरी एक एक विजेता को अपार धन सम्पत्ति के साथ कम से कम पांच साल के लिए व्याह दी जायेगी । इसी लालच में एक से एक क्षत्रिय, ब्राहमण, वैश्य, शूद्र सभी अपना–अपना भाग्य आजमाने रणभूमि में उतर आये हैं । प्राचीन काल में कहते हैं कि महाभारत हुआ था, यह उसी महाभारत की लड़ाई का आधुनिकतम रुपान्तर है ।

अभी–अभी ताजी रिपोर्ट के अनुसार दौरे पर आ रहे 'ख' पार्टी के बड़े ही भयंकर उम्मीदवार कम पहलवान श्री घायलसिंह की कार पिछले पुल के पास खराब हो गई है । अब वे ट्रैक्टर ट्राली में बैठकर इस गजब की चिलचिलाती धूप को अपनी गंजी खोपड़ी रूपी चट्टान पर झेलते हुए चले आ रहे हैं । कोई विरला देशभक्त ही ऐसी कड़ाके की गर्मी को अपनी गंजी खोपड़ी पर झेल सकता है । उनकी इस देशभक्ति के लिए कष्ट सहता देख सारे समर्थक प्रेम विह्वल हो उनकी जय–जयकार के नारे लगा रहें हैं। घायल सिंह गांव में पहुँचकर आम के एक बड़े बगीचे में ठहरे । वहाँ और बहुत से लोग पहले ही जमा थे । घायलसिंह वहाँ घंटों तक बोलते रहे । वे कहना क्या चाहते हैं यह किसी की साफ–साफ समझ में नहीं आया । कुल मिलाकर वह घंटे भर वायदे पर वायदे करते गये कि गांवों को मिटा कर बड़े–बड़े शहरों में बदल देंगे। आम का बाग हटाकर फैक्टरी लगवा देंगे। गरीबी एवं गरीबों का नामोनिशान मिटा देंगें । कच्चे घर तों कहीं नमूने के लिए भी

नहीं दिखेंगें । गांव में पुलिस स्टेशन खुलवा देंगे । इसी तरह के सैकड़ों वादे ही करते रहे। लोग उनके वादों पर जोर से तालियाँ बजाते और उनकी जय जयकार करते। लोगों को यह याद ही नहीं रहता कि पिछली बार भी महाशय ने यही वायदे किये थे और सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि लोग उन बातों पर विश्वास करते हैं हालांकि सभी को पता है कि ये सारे वायदे झूठे हैं।

अभी–अभी 'घ' पार्टी के उम्मीदवार श्री प्रचंडसिंह अपने दर्जनों प्रमुख चमचों से घिरे हुए सामने बड़ी मुश्किल से दिखाई पड़े हैं। उनके और बहुत सारे फालोवर्ज दुम की तरह दूर तक उनके पीछे जुड़े हैं। दूर तक फैली पूरी भीड़ हमारे गांव के स्वच्छय आकाश में अभी अभी प्रवेश किये नये पुच्छलतारे की तरह धूल विखराती बढ़ती ही जा रही है। यह पुच्छलतारा लगभग हर पांच साल बाद इस गांव के आकाश में अपनी धूल छोड़ता चला जाता है । बुजुर्गों का मत है कि जब भी यह पुच्छल तारा दिखाई पड़ता है तो गांव के ऊपर जरुर कोई मुसीबत आती है। इस पुच्छलतारे का नयूक्लियस श्री प्रचंडसिंह है। प्रचंडसिंह जैसे नाम से स्पष्ट है इस गर्मी और धूप में प्रचंड शेर की तरह दिख रहें हैं, लेकिन गाँव की गली में पेशाब की बदबू सड़े इत्र जैसे उनके नाक में बिना परमीशन के ही घुसपैठ किये जा रही है। गांव के इस बदबूदार गन्दे माहौल में घुटन हो रही है , इस लिए रोये जा रहें हैं कि किस झंझट में फंस गये। लेकिन अब तो फंस गये बच्चू जाल में । एक ही दिन मैं सैकड़ों गरीबों के खुरदरे हाथों से मिलकर उर्वशी जैसे उनके मुलायम आर्टिस्टिक हाथ बेहाल हो गये हैं इसलिए अब वे लोगों को दूर से ही नमस्ते करने पर आ गये

हैं । काफी इन्तजार के बाद मेरे कर्कशकरों का भी सौभाग्य उदय हुआ । मैनें दौड़कर उनके सामने दूर तक हाथ फैला दिये तो बरबस उन्हें हाथ आगे बढ़ाने पड़े । सचमुच उनके हाथों में मेरा हाथ आकर धन्य धन्य मतलब डबल धन्य हो गया । ऐसे मुलायम हाथों से भला किसी का बुरा कैसे हो सकता हैं मैंने अपने खुराफाती उपद्रवी दिमाग को समझाया। फिर भी इनके इतने मुलायम हाथ और नाम प्रचन्डसिंह यह विरोधाभाष कुछ समझ में नहीं आया; जिससे दाल में कुछ काला होने का अन्देशा हो रहा था। एक लोकल नेता जी फटाफट उनका सबसे परिचय कराते जा रहे हैं । परिचय का यह सिलसिला बढ़ते–बढ़ते हमारे बूढ़े खंडहर सा दिखने वाले घर के सामने भी आ गया । प्रचंड सिंह के चरणकमल आज हमारे जलरहित खंडहर में खिल रहें हैं यह सचुमुच भाग्य की बात है और यह प्रजातंत्र में ही संभव है । मेरे बाबा जी कहा करते थे कि बेवकूफों से भरी एक बैलगाड़ी लदी जा रही थी और यहीं आकर उलट गई थी । तब से वे यहीं बस गये और तभी से यहीं रहने लगे । प्रजातंत्र की यह विशेषता है कि इसमें बेवकूफों का भी बहुत महत्व होता है । यदि वे अधिक संख्या में हुए तब तो वे सर्वेसर्वा हैं । घर से ८० साल की हमारी दादी जी लम्बा घूँघट काढ़कर निकलीं। मैनें कहा दादी जी देख लो ध्यान से अपने राजा को, कल अपनी मुहर इन्हीं के उपर मारना। ध्यान से देख लो इन सबकी शकल क्योंकि यह पुच्छलतारा अब पांच साल बाद ही नजर आयेगा तब तक तुम रहो या न रहो राम ही जानें। इसके बीच में तो इनके दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे । टिकट लगा दो तब भी नहीं दर्शन कर सकते । मैने सोचा वाह राजनीति भी क्या चीज है कि बेवकूफों

को भी सलाम करने पड़ते हैं। हमारा कुत्ता पलुआ भी बड़ा ही समझदार निकला । भौं भौं करके के इनके स्वागत के लिये झपट पड़ा । वैसे यह बड़ा ही सुस्त ब्रीड का डाग है किन्तु आदमी की पहचान बड़ी अच्छी तरह कर लेता है । बच्चे तो उसकी पूछ के ऊपर कदम रख कर निकल जाते हैं उन्हें वह चूँ भी नहीं करता । फिर निःसन्देह इस इतनी बड़ी भीड़ में कुछ चोर भी रहे होंगे जिन्हें पहचान कर झपट पड़ा होगा । बहरहाल घर पर आया हुआ व्यक्ति मेहमान की तरह होता है। भारतीय संस्कृति की इस नीति एवं परम्परा को ध्यान में रखता हुआ शायद वह दो–चार गालियाँ निकाल कर ही शान्त हो गया ।

विधि के विधान की बात है और उससे ज्यादा भारतीय संविधान की बात है कि शेर भी अपनी मांद से निकल कर आज जनतारूपी चूहों की बस्ती में फंस गया है । प्रचन्ड सिंह के गांव में प्रवेश करते ही सभी गरीब किसान, लुहार,बढ़ई, धरिकार,चमार सामने आते हैं और घुटने तक झुक कर प्रणाम करते है। प्रचन्ड सिंह उनके धूलधूसरित मैले कुचैले बच्चों को गोद में उठाकर मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं। उनके इस अभिनय पर सभी जयजय कार के नारे लगाते हैं, पर मुझे तो परमात्मा ने उल्टी खोपड़ी दी है इसलिए मेरे दिमाग को हमेशा खुराफात ही सूझती है। मुझसे मेरा मन चुपके से कहता है कि प्रचन्ड सिंह को गर्मी बहुत सता रही है, गन्दे बच्चों को गोद में उठाते–उठाते मंहगा सूट भी गन्दा हो गया है, इस लिए बेचारे की आखों से आँसू निकल आये ।

इसी तरह हमारे गांव से होती हुई, रंग–बिरंगे परचों, बैनर्ज एवं पैम्फलेट रूपी फूलों को बिखराती यह चुनाव की

बहार गलियों से निकल कर आगे बढ़ गई । अब तो वही पुरानी वीरान गलियाँ रह गई । लेकिन ये बहार, गाँव से थोड़ी दूर पर जाकर एक रंग–बिरंगे टेन्ट में ठहर गई जो इलेक्शन के दिन तक यहाँ विश्राम करेगी । फिर यह गांव छोड़कर हमेशा हमेशा के लिए विदा हो जायेगी।

पोलिंग स्टेशन पर आज काफी रौनक है क्योंकि आज इलेक्शन का दिन है । यह जनता की जिन्दगी रूपी रामायण में लंकाकाण्ड की तरह है। देश भक्तों के लिए यह पोलिंग बूथ हल्दीघाटी के मैदान से कम नहीं है । खूब हो– हल्ला मचता है। मैं भी सुबह सुबह अपनी बूढ़ी दादी को लेकर वोट डलवाने के लिए चल पड़ा । बूढ़ी दादी इस लिए कहा कि मेरे कई जवान दादियाँ भी हैं। बूढ़ी दादी की हेल्प करके सोचा थोड़ा पुण्य कमा लूँ तो अच्छा रहेगा । पोलिंग स्टेशन लगभग पांच किलोमीटर दूर था । पैदल रास्ता था वो भी कच्चा। सोचा था सुबह सुबह भीड़ कम होगी पर जब पोलिंग बूथ पर पहुँचा तो पहले ही अप्रत्याशित लम्बी लाइन लगी थी । बहरहाल मैंने भी दादीजी को लाइन में फिट कर दिया। दादीजी फिर घंटे बाद चुनाव की सभी प्रक्रियाओं से गुजरती हुई बाहर आई। मैंने पूछा दादी जी अपना कीमती वोट किसकी झोली में डाल कर आई हैं ,मुहर किस के चेहरे पर मार कर आई हैं ,जरा अपना सीक्रेट शेयर करेंगी मेरे साथ। वे बोलीं ,बेटा ! इस उम्र में काहें को दो आँख करूँ। मैंने तो सब के ऊपर एक एक मुहर मार दी है ताकि सभी खुश रहें । इस उम्र में काहें किसी को नाराज करूँ । मैंने भी कहा–वाह दादी ! बधाई हो । बहुत अच्छा निर्णय किया । न्याय हो तो ऐसा ही । कौन सा सरकार ने तुम्हारे लिए स्कूल खोल रखा है । सारी उमर तुम लोगों

की कमाई ले जाकर खाई है। तुम्हारी क्या गलती है इसमें । तुम इसी तरह सब को एक आँख से देखती रहना जब तक कि तुम्हें दो आंखों से देखना न सिखाया जाय ।

थोड़ी देर में दो तीन गाड़ियाँ धड़धड़ाती ,धूल उड़ातीं आईं और उनमें से तमाम पहलवान छाप मोटे मोटे जीव नीचे उतरे । उनमें से एक ने सब को संबोधित करते हुए कहा–भाइयों एवं उनकी बहनों ! आप सबने बहुत कष्ट किया है इतनी दूर आकर मेरे लिए , किन्तु अब आप लोगों को मैं और अधिक कष्ट नहीं देना चाहता, अब कृपया आप लोग अपने–अपने घरहै? राजनीति तो राजाओं के लिए होती है। वोट–सोट डालने का झंझटी काम क्यों अपने ऊपर लेतें हैं। यह झंझटी काम हमीं लोग कर लेंगे, हमारे कुछ पहलवान हैं वो कर लेंगें । हम अपनी जन्ता को परेशान नहीं करना चाहते । आप लोग मेरा मतलब समझ ही गये होंगे । कुछ लोगों को बात अच्छी लगी , अपने घर का रास्ता पकड़ लिया। दूसरी पार्टियों के कुछ अभिकर्ता भी वहाँ मौजूद थे । उनके अलावा कुछ पढ़े–लिखे नौजवान भी वहाँ मौजूद थे उन्हें यह बात हजम नहीं हुई । उन्होंने उन पहलवानों की बात का प्रतिरोध किया । बोले! नहीं, वोट डालना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और कर्तव्य भी है , इस लिए वोट डालने का कष्ट तो हम आप ही उठायेंगे । आप लोग तो मेहमान हैं दो घंटों के, चाय पानी पीजिए और फिर जिस बिल से निकले हैं उसी में वापस घुस जाइये। सारे पहलवान गुस्से में आ गये । उनके तेवर बदलने लगे । इन हरामजादों, सालों, कुत्तों की इतनी मजाल । कुछ पहलवान आगे बढ़े किन्तु कई लोग रास्ते में खड़े हो गये । फिर पहलवान, पहलवान ही होते हैं, घूसेंबाजी पर उतर

आये और फिर दूसरे स्टेज पर पिस्तौल और चाकू चलने लगे । फिर तो भाग दौड़ हो–हल्ला मच गया । फिर क्या था खूब वोट डाले गये, अपनी अपनी मरजी से जो जितना डाल सका डाला। किसी ने किसी के सिर पर वोट डाले तो किसी ने किसी की टांग पर ही अपनी लाठी से मुहर लगा दी । किसी के सीने में छेद हो गया तो किसी की खोपड़ी से लाल तेल निकल आया । डियूटी पर तैनात पुलिस आराम से खड़ी तमाशा देख रही थी। पोलिंग बूथ पर जिनकी जिनकी डियूटी लगी थी वे बेचारे सहमे डरे दूर खड़े थे। ठीक भी है जहाँ जनता समझदार है और अपने आप अपना वोट डाल सकती है, इनकी क्या जरूरत है । इस हल्दीघाटी के मैदान में दर्जनों लोग घायल हो गये चार पांच तो उसी दिन परलोक सिधार गये और उनका नाम भारत के इतिहास में यदि सुनहरे अक्षरों में नहीं तो कम से कम काले अक्षरों में अवश्य ही लिखा जायेगा और हमारी आगे आने वाली जनरेशन उनकी बहादुरी के विषय में पढ़ेंगी।

अगले दिन पता चला कि श्री प्रचंडसिंह विजयी घोषित हुए हैं। वे फिर कभी दौरे पर नहीं आये लेकिन पोलिंग बूथ पर दंगा फसाद कराने के जुर्म में सभी गरीब किसानों, मजदूरों धरिकारों ,चमारों को जेल भिजवा दिया। जो इस संघर्ष में शहीद हो गये थे उनके लिए एक स्मारक बनाने का आश्वासन दिया और इसी के साथ उनके द्वारा जनता की सेवा शुरू हो गई ।

For purchase of this hasya vyanga hindi book please contact at :
yadavsumitra@gmail.com